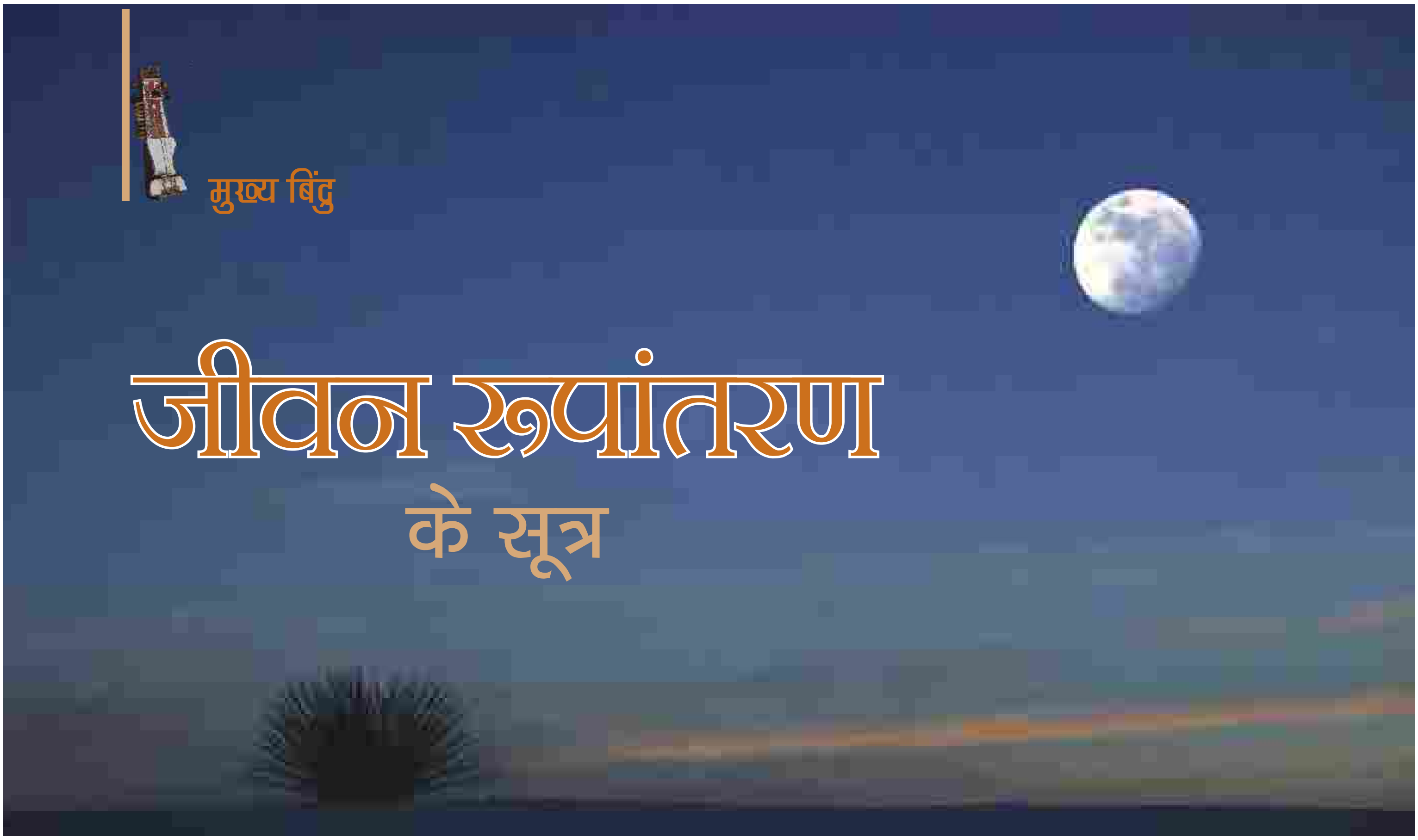

मुख्य बिंदु

जीवन रूपांतरण के सूत्र

थोड़ा जागो। पहला जागरण इस बात का कि यह संसार इतना मूल्यवान ही नहीं है कि इसमें तुम इतने परेशान हो। कोई आदमी तुम्हें गाली देता है; न तो वह आदमी इतना मूल्यवान है, न उसकी गाली इतनी मूल्यवान है कि तुम परेशान होओ। न तुम्हारा अहंकार इतना मूल्यवान है कि उसके लिए तुम उपद्रव खड़ा करो। यह धर्मशाला है। किसी का पैर तुम्हारे पैर पर पड़ गया, परेशान मत हो।

मुल्ला नसरुद्दीन एक सिनेमा से बाहर आ रहा था इंटरवल में। एक आदमी के पैर पर उसका पैर पड़ा। वह आदमी तिलमिला गया। लेकिन उसने सोचा कि अंधेरा है, अभी-अभी प्रकाश हुआ है, एकदम से लोगों को दिखायी भी नहीं पड़ता अंधेरे में रहने के बाद, हो गयी होगी भूल। फिर लौट कर नसरुद्दीन आया। उस आदमी के पास आ कर पूछा कि क्या भाई साहब, आपके पैर पर मेरा पैर पड़ गया था? उस आदमी ने सोचा कि यह क्षमा मांगने आया है। उसने कहा कि हां। मुल्ला ने पीछे लौट कर अपनी पत्नी से कहा, आ जाओ, यही अपनी लाइन है। वे लाइन बनाने के लिए पैर पर पैर रख गए थे!

तो जो आदमी तुम्हें गाली दे रहा है, उसके अपने प्रयोजन होंगे। तुम्हें उसमें परेशान हो जाने की कोई जरूरत नहीं है। भीड़-भड़क्का है यहां। काफी लोग हैं। सब अपना-अपना खोज रहे हैं। किसी से तुम्हें न प्रयोजन है, न तुम्हें किसी से प्रयोजन है। किसी का किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। यहां हर आदमी अपना खेल खेल रहा है। और थोड़े धक्के-मुक्के होंगे ही। क्योंकि इतनी भीड़ है, रास्ता है, इतना ट्रेफिक है।

अगर तुम थोड़ा सा इसे देख पाओ और तुम इस बोध को रख सको, क्रोध गिरेगा, घृणा गिरेगी, ईर्ष्या गिरेगी, जलन...और उनसे पैदा होने वाले कृत्य विदा हो जाएंगे। जिस दिन तुम्हारे घृणा से संबंधित कृत्य गिर जाएंगे, उसी दिन तुम्हें लोगों पर दया आने लगेगी। क्योंकि हर आदमी मूर्च्छित है। कल क्रोध आता था, अब दया आएगी। और तुम्हें लगेगा हर आदमी भटका हुआ है। लोग अंधेरे में जी रहे हैं। किसी का कोई कसूर

नहीं है। लोग सोए हुए हैं। सोया हुआ आदमी बड़बड़ा रहा हो, गाली बक रहा हो, तो भी तुम कुछ न कहोगे। नींद में है, तुम कहोगे। लेकिन यही हालत सब की है।

एक शराबी गाली दे रहा हो, तो तुम कहते हो शराबी है, पी गया है। लेकिन यही हालत सब की है। जन्मों-जन्मों के कर्मों की शराब है। गहरी नींद है। तुम्हें दया आएगी। अगर तुम थोड़े भी जगोगे, तो तुम्हें दया आएगी कि चारों तरफ इतने लोग कितनी परेशानी उठा रहे हैं। धर्मशाला को घर समझे हुए हैं। अदालतों में मुकदमें लड़ रहे हैं, कि धर्मशाला किसकी है।

तुम्हें दया आनी शुरू होगी। और तुम्हारी दया के साथ ही, तुम्हारे कृत्यों का रूप बदलेगा। जहां कृत्य पाप थे, वहां पुण्य होने लगेंगे। जहां तुम दूसरे को नुकसान पहुंचाने को तत्पर हो जाते थे, वहां दूसरे को सहारा देने को तत्पर हो जाओगे। जो तुम्हें गाली देगा, उसको भी सहारा देने की दया तुम्हारे भीतर होगी।

इसलिए तो नानक कहते हैं, ज्ञान और दया। ज्ञान यानी जागरण, और दया यानी तुम्हारे कृत्यों में जागरण के कारण हुआ परिवर्तन। अज्ञान भीतर, हिंसा बाहर। उन दोनों का संग है। ज्ञान भीतर, करुणा बाहर। उन दोनों का संग है।

'कर्म के अनुसार विचार होगा।'

अब यह बहुत मजे की बात है कि तुम अच्छी-अच्छी बातें सोचते हो और बुरी-बुरी बातें करते हो। करते तुम बुरा हो, सोचते बड़ा अच्छा हो। लेकिन तुम्हारे सोचने का कोई विचार होने वाला नहीं है। तुमने क्या सोचा, इससे कुछ हिसाब नहीं है। तुमने क्या किया, वही तुम्हारा प्रमाण है। कृत्य तुम्हारा प्रमाण है, तुम्हारा विचार नहीं। विचार तो पापी भी बड़े अच्छे-अच्छे करते हैं। कारागृहों में जा कर अपराधियों को देखो, वे भी बड़े ऊंचे विचार करते हैं। ऊंचा विचार करना तो एक तरकीब है। बुरा काम करने की तरकीब है, ऊंचा विचार करना।

इसे थोड़ा समझना। यह थोड़ा बारीक है। जब आदमी बुरा काम करता है तो उसके भीतर पछतावा होता है। जब आदमी किसी पर कठोर हो जाता है, क्रोध करता है, अपमान कर देता है, तो भीतर पछतावा होता है। भीतर लगता है, यह उचित नहीं हुआ। तो भीतर अच्छे-अच्छे विचार करता है, करुणा के, दया के, कि दुबारा मौका आने पर दया करूंगा। पछताता है कि जो भीतर, जो संतुलन खो गया है बुरा कर के, उस पलड़े को वह भारी कर देता है विचार के, शुभ धारणाओं के कारण। तुम अच्छा-अच्छा सोचते हो, ताकि तुम्हारी नजर में जो तुमने बुरा किया है, वह ढंक जाए। बुरे आदमी हमेशा अच्छे विचार करते हैं।

और इससे उलटा भी सही है। अच्छे कृत्य करने वाले लोग अक्सर बुरा विचार करते हैं। और अगर तुम जाग जाओगे तो तुम पाओगे कि ये दोनों स्थितियां ही भ्रांत हैं। चोर अक्सर सोचता है कि दान करूं। इसलिए तुम चोरों को दान करते पाओगे भी। चोर अक्सर सोचता है कि मंदिर बना दूं, कि गरीबों को भोजन करवा दूं, कि सर्दी आ गयी कंबल बंटवा दूं। और तुम चोरों को कंबल बंटवाते पाओगे भी। क्योंकि चोरी का दंश ऊपर होता है। लाख रुपए की चोरी की तो हजार रुपए का दान तो करने का मन होता ही है। उससे आदमी सोचता है कि संतुलन हो जाएगा। पापी गंगा स्नान करने जाता है। वहां थोड़ी दान-दक्षिणा करता है, सोचता है, सब निपट गया। घर हलका हो कर लौटता है। हलके हो कर लेकिन तुम करोगे क्या? करोगे तुम वही, जो तुमने कल किया था। अब तुम हलके मन से करोगे। यह और खतरा है। अब तुम निश्चिंत भाव से करोगे।

एक महिला एक डाक्टर के पास जा रही थी। एक मनस्विद के पास। उसके हाथ से बर्तन छूट जाने की उसे बीमारी थी। बर्तन टूट जाते, गिर जाते। और उससे वह बहुत ज्यादा नर्वस, और बहुत बेचैन, व्याकुल, कंप जाती थी। बड़ी दुखी होती थी। छः महीने की मनसचिकित्सा के बाद उसने मनोवैज्ञानिक ने पूछा कि अब तो सब ठीक है? अब घबड़ाहट तो नहीं होती? बर्तन तो नहीं गिरते? उस स्त्री ने कहा कि बर्तन तो अभी भी गिरते हैं, लेकिन बाकी सब ठीक है। चिकित्सक ने कहा कि फिर बाकी सब ठीक का क्या अर्थ है? उसने कहा कि अब आप के समझाने से घबड़ाहट बिलकुल नहीं होती।

जो आदमी थोड़ा पुण्य कर लेता है, पुण्य के कारण अब घबड़ाहट बिलकुल नहीं होती। और सोचता है कि पुण्य कर के निपट गए। पाप तो खतम हो गया, अब फिर किया जा सकता है। और एक तरकीब भी हाथ में लग गयी; जब भी पाप करो, पुण्य कर लेना।

इसलिए तो यह मुल्क इतना पापी हुआ है। क्योंकि इस मुल्क को पुण्य की तरकीब हाथ में लग गयी। आज भारत जैसा पापी मुल्क खोजना कठिन है। और उसका

पापी गंगा स्नान करने जाता है। वहां थोड़ी दान-दक्षिणा करता है, सोचता है, सब निपट गया। घर हलका हो कर लौटता है। हलके हो कर लेकिन तुम करोगे क्या? करोगे तुम वही, जो तुमने कल किया था। अब तुम हलके मन से करोगे। यह और खतरा है। अब तुम निश्चिंत भाव से करोगे।

कारण यह है कि गंगा यहां बहती है। गए, स्नान कर के आ गए। पाप किया, मंदिर में जा कर प्रसाद चढ़ा आए। पाप किया, हनुमान जी को एक नारियल फोड़ दिया।

हनुमान जी का कोई संबंध भी नहीं है, कोई उनका कसूर भी नहीं है। तुम्हारे पाप में कुछ लेना-देना नहीं है। और तुम उनको भी भागीदार बना रहे हो। इधर भूल की, उधर जा कर सुधार आए। फिर भूल करने को तैयार हो कर वापस आ गए। जब भी तुम बुरा करते हो, तब तुम भले विचार करते हो। ताकि भूल का जो तुम्हारे भीतर दंश, कांटा लग गया, वह निकल जाए। और तुम्हारी जो प्रतिमा भीतर अच्छे आदमी की खंडित हो गयी, वह फिर अखंड हो जाए।

लेकिन तुम्हारे विचारों का कोई हिसाब होने वाला नहीं है। तुम क्या करते हो, वही तुम बनते हो। तुम क्या सोचते हो, इससे कोई संबंध नहीं है। और बड़े आश्चर्य की बात है कि जब भी कोई शुभ कृत्य करना हो तब तुम टालते हो, पोस्टपोन करते हो। तुम कहते हो, कल करेंगे, जल्दी क्या है? और जब भी कोई बुरा कृत्य करना होता है, तो तुम कभी नहीं कहते कि कल करेंगे। तुम कहते हो, अभी हो जाए, इसी वक्त। जब तुम्हें किसी की हत्या करनी है, तब तुम उसी वक्त करते हो। क्यों? क्योंकि तुम भी भलीभांति जानते हो, जो टाला, वह सदा के लिए टल जाएगा, वह कभी नहीं होगा। क्रोध करना हो तो उसी तक्त करते हो। तुमने कोई आदमी देखा जो कहे कि अच्छा भाई, अभी हम जरा काम में हैं, कल आ कर क्रोध करेंगे। तुमने गाली दी, वह हजार काम छोड़ देता है। पत्नी मर रही हो, वह दवा लेने जा रहा था। वह कहता है, मर जाए कल ही मरने वाली आज, लेकिन पहले यह निपटारा करना है। क्योंकि तुम भी भलीभांति जानते हो कि तुमने टाला कि सदा के लिए टल जाएगा। फिर कभी न कर पाओगे।

गुरजिएफ का पिता मरा। और उसने उससे कहा कि सिर्फ एक बात तू खयाल रखना, कि जब भी क्रोध करना हो चौबीस घंटे रुक कर करना। कोई गाली दे, उससे कह आना, कि भई चौबीस घंटे बाद आ कर कहूंगा उत्तर। क्योंकि क्या करूं, बाप मरते वक्त यह वचन ले गया है। नौ साल का था गुरजिएफ। कुछ समझता भी न था। वचन दे दिया।

गुरजिएफ ने लिखा है बाद में, कि मेरी पूरी जिंदगी उस वचन के कारण बदल गयी। क्योंकि चौबीस घंटे में कहीं किसी ने क्रोध किया है लौट कर? चौबीस घंटे में तो मूर्खता समझ में आ जाती है कि यह बात ही फिजूल है। चौबीस घंटे में निन्यानबे मौकों पर तो यह भी समझ में आता है कि उस आदमी ने जो कहा था, वह ठीक ही कहा है। वह गाली नहीं है, ठीक मेरा वर्णन है। अगर उसने कहा, चोर! तो चौबीस घंटे में खुद ही समझ में आ जाता है कि बात तो ठीक ही कह रहा है कि मैं चोर हूं। उसने कहा, बेईमान! चौबीस घंटे में खुद ही समझ में आ जाता है कि बात तो ठीक ही है, हूं तो बेईमान। यह तो वर्णन हुआ, गाली कहां हुई!

तो गुरजिएफ बहुत दफा जाकर तो धन्यवाद दे आया, कि तुमने जो कहा था बिलकुल ठीक कहा था। क्रोध का तो कोई सवाल ही नहीं है। तुम्हारी बड़ी कृपा कि तुमने बताया। जो मुझे नहीं दिखता था, तुमने समझाया। बीमारी जो बता दे वह चिकित्सक है, दुश्मन थोड़े ही है। निदान कर दिया तुमने। डायग्नोसिस हो गयी।

या चौबीस घंटे बाद वह जा कर कह आता कि भाई, मैंने बहुत सोचा, लेकिन तुम्हारी बात बिलकुल ही गलत मालूम पड़ती है। मुझ पर लागू नहीं होती। और जब लागू ही नहीं होती तो हम किसलिए क्रोध करें? हम से उसका कुछ लेना-देना नहीं, तुम किसी और के संबंध में कह रहे होओगे। इसकी कोई संगति ही नहीं है। या तो संगति पायी, तब धन्यवाद दे आता। या जब असंगति पायी तो झूठ के लिए कोई क्रोधित होता है?

> **इस मुल्क को पुण्य की तरकीब हाथ में लग गयी। आज भारत जैसा पापी मुल्क खोजना कठिन है। और उसका कारण यह है कि गंगा यहां बहती है। गए, स्नान कर के आ गए। पाप किया, मंदिर में जा कर प्रसाद चढ़ा आए। पाप किया, हनुमान जी को एक नारियल फोड़ दिया**

तुमने कभी खयाल किया? तुम जब भी क्रोधित होते हो, तो कोई सच बात कह रहा होता है, तभी क्रोधित होते हो। तुम चोर हो, और कोई कह देता है चोर। तुम अगर चोर नहीं हो, तो कोई कितना ही चोर कहे, क्रोध पैदा नहीं होता। क्योंकि क्या क्रोध करना! वह आदमी बात ही झूठ कह रहा है। वह किसी और के संबंध में कह रहा होगा। उससे मेरा कोई लेना-देना नहीं। उसकी चोट ही नहीं पड़ती।

लेकिन तुम छिपाए थे कि तुम चोर हो। तुम सब तरफ साधु का वेश बनाए थे, मंदिर जाते थे, माला जपते थे। तुम्हारा वेश धोखे का था। और इस आदमी ने असली बात पकड़ ली, इसने कह दिया चोर; चोट लगती है। ध्यान रखना, सत्य से चोट लगती है; झूठ से कैसे चोट लगेगी? झूठ की कोई ताकत है? झूठ में कोई बल है? लेकिन हम बुराई तो उसी वक्त करते हैं। और भलाई को हम कहते हैं, कल आना।

एक मारवाड़ी गर्मी के दिनों में अपनी खस की टट्टी के पीछे बैठा हुआ हिसाब-किताब कर रहा है। एक भिखारी मांगने आया। वह कहता है, मिल

उसने कहा, तो दो रोटी मिल जाएं। उस मारवाड़ी ने कहा, भागो यहां से, यहां कोई रोटी-वोटी नहीं है। उसने कहा, कुछ कपड़ा-लता? जैसे कि भिखारी अड़ियल होते हैं। लेकिन मारवाड़ियों से कोई जीता है? और उस मारवाड़ी ने कहा कि यहां कुछ नहीं है, आगे बढ़ो। उस भिखारी ने कहा, फिर भीतर बैठे क्या कर रहे हो? चलो हमारे साथ ही हो जाओ। जो भी मिलेगा आधा-आधा कर लेंगे।

कोई दो पैसे भी मांगे तो तुम टालते हो। कोई दो रोटी भी मांगने आ जाए तो तुम पूरे प्राणपण से लग जाते हो कि कैसे हटे। अच्छा करने की हिम्मत ही नहीं होती। और बुरा करने को तुम बिलकुल ही कमर बांध कर तैयार खड़े हो। जैसे कि प्रतीक्षा ही कर रहे थे, कि आओ।

बुरे को स्थगित करना और भले को स्थगित मत करना, तुम्हारा जीवन बदल जाएगा। बुरे को कहना, कल करेंगे। भले को अभी कर लेना। क्योंकि कल का क्या भरोसा है? अगर तुम्हारे जीवन का यह सूत्र हो जाए कि बुरे को स्थगित करना, बुरा होगा ही नहीं। भले को तत्क्षण करना, बहुत भला होगा। अभी भी तुम वही कर रहे हो, उलटे ढंग से। अभी तुम बुरा करते हो, भले को टालते हो। भला फिर कभी नहीं होता, बुरा रोज होता है। तुम्हारे सारे कृत्यों की शृंखला कांटों की हो जाती है। उसमें फूल फिर आते नहीं।

> कृत्य भी तुम गलत करते हो, व्यर्थ का सामान इकट्ठा करते हो, व्यर्थ के विचार इकट्ठे कर लेते हो। तुम धीरे-धीरे एक कबाड़खाना हो जाते हो। कबाड़ी की दुकान में और तुम्हारे जीवन में कोई अंतर नहीं है। थोड़ा सजग होओ

नानक कहते हैं, 'लेकिन विचार होगा कर्म का। वह परमात्मा सच्चा है और उसका दरबार भी सच्चा है।'

और ध्यान रखना, कि तुम सच्चे हुए तो ही उसके दरबार में प्रवेश पा सकोगे। तुम किसे धोखा दे रहे हो? तुम सारे संसार को धोखा दे सकते हो, लेकिन क्या तुम स्वयं को धोखा दे सकते हो? तुम तो जानते ही हो कि तुम क्या हो! सारी दुनिया तुम्हें पूजे, कहे कि तुम साधु हो, लेकिन तुम तो भीतर जानते ही हो कि तुम कौन हो? उस भीतर छिपे को कैसे धोखा दोगे? वह जो तुम्हारा भीतर छिपा हुआ अस्तित्व है, वही तो परमात्मा है। परमात्मा के सामने तुम कैसे वंचना करोगे? वहां तो तुम नग्न हो। वहां तो सब खुला है। वहां तो कुछ ढंका नहीं हो सकता। उस दरबार में तो सच्चे ही तुम हो सकोगे तो ही प्रवेश पा सकोगे।

लोग पूछते हैं, परमात्मा को कैसे पाएं? लोगों को पूछना चाहिए, सच्चे कैसे हों? परमात्मा को पाने की बात ही छोड़ देनी चाहिए। जैसे लोग पूछते हैं, परमात्मा दिखायी नहीं पड़ता। उन्हें पूछना चाहिए, मुझे परमात्मा क्यों दिखायी नहीं पड़ता?

झूठी आंखें उसे नहीं देख सकती। सत्य को देखना हो तो सच्ची आंखें चाहिए। सत्य को अनुभव करना हो तो सच्चा हृदय चाहिए। सत्य को पहचानना हो तो तुम्हें भी सच्चा होना पड़े। क्योंकि समान ही समान को पहचान सकता है। तुम अभी जहां खड़े हो, जैसे खड़े हो, बिलकुल झूठ हो।

झूठ का मतलब इतना नहीं है कि तुम जो बोलते हो वह झूठ है। तुम्हारा होना ही झूठ है। तुम्हारे चेहरे झूठ हैं। तुम्हारा व्यवहार झूठ है। तुम कहते कुछ हो, तुम सोचते कुछ हो, तुम करते कुछ हो। तुम्हारी बात का, तुम्हारे होने का कोई भी भरोसा नहीं है। तुम्हें खुद ही भरोसा नहीं है कि तुम क्या कर रहे हो। क्या तुम यही करना चाहते हो? तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम यही सोचते हो जो तुम कह रहे हो?

लेकिन तुम डरोगे बहुत। क्योंकि अगर तुम सच्चे होने लगे तो तुमने धर्मशाला में जो घर बनाया है, वह गिरने लगेगा। क्योंकि इस धर्मशाला में—धर्मशाला का अर्थ है, वह पड़ाव है, घर नहीं है—बड़े से बड़ा झूठ तो तुमने यह खड़ा किया है, कि तुमने घर बना लिया है। अब तुम कागज की नाव में बैठे हो और यात्रा कर रहे हो। तुम यात्रा करोगे कैसे? किनारे पर ही बैठे रहोगे। नाव को पानी में भी उतारना खतरनाक है। क्योंकि कागज की नाव है, उतरी कि डूबी। उतरी की गली।

लोग मेरे पास आते हैं। और वे कहते हैं कि अगर हम सच्चे हो जाएं तो जीवन बहुत मुश्किल हो जाएगा। हो ही जाएगा। क्योंकि झूठ से तुमने जीवन को बनाया है, इसलिए। शुरू में तो बहुत मुश्किल होगा। न बदलो तो भी मुश्किल है। कौन सा सुख तुमने जाना है? कौन से आनंद का फूल तुम्हारे जीवन में खिला है? कौन सी सुगंध आयी है? क्या है कि जिसके कारण तुम कह सको कि जीना सार्थक हुआ? कुछ भी तो दिखायी नहीं पड़ता।

कठिन तो अभी भी है। लेकिन इस कठिनाई के तुम आदी हो गए हो। जब तुम सच में बदलने की कोशिश करोगे तो आदतें टूटेंगी। जिस आदमी से तुम्हें कुछ प्रेम नहीं है, उससे तुम कहते हो, आप आए, बड़ा सौभाग्य है। और भीतर सोचते हो कि इस दुष्ट का चेहरा कैसे दिखायी पड़ गया सुबह-सुबह! आज का दिन खराब हो गया।

अगर वह आदमी भी थोड़ा समझदार हो, थोड़ा सजग हो, तो वह तुम्हारे झूठ को देख लेगा। क्योंकि तुम कहो कुछ भी, तुम्हारी आंखें खबर देंगी। तुम्हारा चेहरा, तुम्हारा हाव-भाव प्रसन्नता प्रकट नहीं करेगा। तुम्हारे शब्द और होंगे, तुम्हारे ओंठ और होंगे। उन दोनों में कोई संगति न होगी।

क्योंकि जब कोई आदमी सच ही प्रसन्न होता है, तो प्रसन्नता की बात

कहता थोड़े ही है! उसका रोआं-रोआं गदगद हो उठता है। जब कोई आदमी सच ही प्रसन्न होता है, तो उसको तुम पहचान सकते हो। लेकिन दूसरा भी सोया हुआ है। वह भी सोचता है कि तुम ठीक कह रहे हो। इसलिए तो खुशामद दुनिया में सफल होती है। सब झूठी है। और सुनने वाला भी अगर गौर से सुने तो समझेगा कि तुम बिलकुल गलत बात कह रहे हो। यह है ही नहीं।

इंग्लैंड में कवि हुआ ईट्स। इसे नोबल प्राइज मिली। उसका स्वागत किया गया। वह बहुत सच्चा आदमी था। बहुत सरल आदमी था। उसके काव्य में भी वैसी सच्चाई है। जब उसका स्वागत किया गया तो स्वागत में तो जैसा होता है, लोग स्तुति करते हैं। जो सदा गाली देते थे, वे भी वहां खड़े हो कर स्तुति करते हैं। वह बड़ा हैरान हुआ। और उसे बड़ा संकोच होने लगा कि ये सब झूठी बातें मेरे संबंध में कही जा रही हैं। वह अपनी कुर्सी में सिकुड़ता गया—दो घंटे!

जब स्तुति खतम हुई तो लोगों ने देखा कि वह कुर्सी में बिलकुल ऐसा दबा बैठा है, कि जैसे अब उसके बर्दाश्त के बाहर है। उसे हिलाया सभापति ने और उससे कहा, आप सो तो नहीं गए हैं? उसने कहा कि मैं सो नहीं गया हूं, लेकिन अगर मुझे यह पता होता तो मैं न आता। कुछ समझा नहीं सभापति! उसने खड़े हो कर घोषणा की, कि पच्चीस हजार पौंड हमने पूरे मित्रों ने इकट्ठे किए हैं तुम्हारी भेंट के लिए। सोचा सभी ने कि वह बड़ा प्रसन्न होगा। उसने खड़े हो कर कहा कि अगर मुझे पता होता कि सिर्फ पच्चीस हजार पौंड के लिए इतना झूठ मुझे सुनना पड़ता तो मैं आता ही नहीं। सिर्फ पच्चीस हजार पौंड के लिए इतना झूठ! महंगा सौदा रहा। दो घंटे!

अगर तुम थोड़े सजग हो तो तुम्हारी कोई खुशामद न कर सकेगा। क्योंकि तुम पाओगे कि यह आदमी झूठ बोल रहा है। लेकिन तुम सजग नहीं हो, लोग झूठ बोल रहे हैं चारों तरफ, तुम्हारे खयाल में नहीं आता। तुम खुद झूठ बोल रहे हो, वह तक तुम्हारे खयाल में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो? और तब तुम फंसते हो बड़ी झंझटों में। किसी स्त्री से कह बैठते हो कि तू बड़ी सुंदर है। तुझसे मुझे बड़ा प्रेम है। फिर तुम उलझन में पड़े। तुम शायद झूठ ही कह रहे थे। अब यह सिलसिला शुरू हुआ। कल तुम पछताओगे।

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी ने कहा उससे एक दिन सुबह चाय पीते

> **झूठी आंखें उसे नहीं देख सकती। सत्य को देखना हो तो सच्ची आंखें चाहिए। सत्य को अनुभव करना हो तो सच्चा हृदय चाहिए। सत्य को पहचानना हो तो तुम्हें भी सच्चा होना पड़े। क्योंकि समान ही समान को पहचान सकता है। तुम अभी जहां खड़े हो, जैसे खड़े हो, बिलकुल झूठ हो**

अब तुम्हारे ये ढंग! अगर यही व्यवहार करना था तो मेरे पीछे क्यों पड़े थे? मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, तू बिलकुल ठीक कह रही है। कभी किसी चूहादानी को चूहे को पकड़ने के लिए दौड़ते देखा है? चूहा खुद ही फंसता है। यह बात सच है तेरा कहना कि हम खुद ही तेरे पीछे पड़े थे।

स्त्रियां होशियार हैं इस मामले में। इसलिए कोई पति कभी उनको यह नहीं कह सकता कि तू मेरे पीछे पड़ी थी। कोई स्त्री ऐसी भूल नहीं करती। क्योंकि यह झंझट आज नहीं कल तो आने ही वाली है। हमेशा पुरुष ही फंसता है। क्योंकि स्त्री चुपचाप देखती हैं। वह सुनती हैं, वह राजी होती हैं, सिर हिलाती हैं। बाकी कभी इनिशिएटिव नहीं लेती। पहल नहीं करती। वह नसरुद्दीन ठीक कहता है कि कोई पिंजड़ा चूहे के पीछे नहीं भागता। स्त्रियां ज्यादा होशियार हैं। वे अपने आप ही...।

जब नसरुद्दीन मरने लगा तो उसके बेटे ने पूछा कि कोई सूत्र जीवन के अनुभव के? तो उसने कहा, तीन बातें सीखी हैं पूरे जीवन में। एक यह, कि अगर लोग थोड़ा धैर्य रखें तो फल अपने आप ही पक जाते हैं और गिरते हैं। उनको तोड़ने के लिए झाड़ पर चढ़ने की कोई जरूरत नहीं। और दूसरी बात, कि लोग अगर धैर्य रखें तो लोग अपने आप ही मर जाते हैं। उनको मारने के लिए युद्ध वगैरह करने की कोई जरूरत नहीं। और तीसरी बात, अगर लोग सच में धैर्य रखे तो स्त्रियां खुद पुरुषों के पीछे भागेंगी। उनके पीछे भागने की कोई जरूरत नहीं है। उसने कहा, ये तीन चीजें मैंने जीवन का सार अनुभव की हैं। लेकिन कोई सार से तो चलता नहीं। न कोई अनुभव से चलता है।

क्या तुम बोलते हो? क्या तुम करते हो? होशपूर्वक करोगे तो तुम पाओगे निन्यानबे तो गिर गया। निन्यानबे प्रतिशत तो गिर गया। एक प्रतिशत बचेगा। वह एक प्रतिशत धर्मशाला के लिए काफी है। वह निन्यानबे प्रतिशत से घर बना रहे थे तुम। वह जो एक प्रतिशत बचेगा, वही संन्यासी का जीवन है। जो अनिवार्य है वही बचेगा। जो अपरिहार्य है वही तुम करोगे। जो अनावश्यक है वह कट जाएगा। अनावश्यक ही तो गृहस्थ का उपद्रव है। कितनी अनावश्यक चीजें तुम घर में खरीद कर ले आए हो।

एक घर में मैं मेहमान हुआ। तो वहां इतनी चीजें थीं कि उस घर में चलना-फिरना तक मुश्किल था। वे अमीर हैं, लेकिन वे इस भांति रह रहे हैं कि गरीब के झोपड़ों में भी ज्यादा जगह होती है। जो मिलता है बाजार से

है, वह उनके घर होनी ही चाहिए। घर भर गया है चीजों से। वहां रहना ही मुश्किल है। वहां चलना मुश्किल है। मैंने उनसे कहा कि यह अजायबघर है कि घर? यहां तुम रहते हो कि यह कोई प्रदर्शनी है? इनमें से सभी चीजें करीब-करीब बेकार हैं। इनसे तुम छुटकारा पाओ। घर में थोड़ी जगह होनी चाहिए, जगह का नाम घर है। यहां तो रहना ही मुश्किल है। थोड़े दिन में तुम को बाहर रहना पड़ेगा, अगर यही सिलसिला रहा।

तुम घर में भी कबाड़ इकट्ठा करते हो। चीजें व्यर्थ हो जाती हैं तो भी रखे रहते हैं लोग कि शायद कभी काम पड़ें। खराब हो गयी चीजों को भी रखे रहते हैं कि शायद कभी काम पड़ें।

एस्कीमोज़ एक नियम मानते हैं। और उनका नियम अगर सारी दुनिया माने तो दुनिया में बड़ी शांति और बड़ा आनंद हो जाए। हर वर्ष, वर्ष के प्रथम दिन वे अपने घर की सब चीजें बांट देते हैं। फिर से अ, ब, स, से शुरू करते हैं। तो एस्कीमो का छोटा सा घर जितना साफ-सुथरा होता है, दुनिया में किसी का नहीं होता। ऐसे भी उसके पास ज्यादा नहीं होता; लेकिन पहली तारीख को हर वर्ष की सब बांट देना है। फिर सब चीजें शुरू करनी हैं। एक ताजगी! और व्यर्थ इकट्ठी ही नहीं करता वह, क्योंकि पता है कि एक तारीख को सब बांट देना है। तुम्हीं सोचो! अगर हर साल की एक तारीख को बांट देना हो, तो कितनी चीजें तुम ले आए हो जो कभी न लाए होते।

तुम व्यर्थ की चीजें ही घर में इकट्ठी नहीं करते, उसी तरह तुम व्यर्थ के विचार भी इकट्ठे करते हो। कोई आदमी तुम्हें सुना रहा है कुछ भी, तुम सुनते जाते हो। अखबार में तुम कुछ भी पढ़ते जाते हो। तुम यह भी नहीं पूछते कि ये विचार इकट्ठे करने हैं? तुमने कभी किसी आदमी से कहा कि भाई इन बातों की मुझे कोई भी जरूरत नहीं? कोई आदमी किसी की निंदा कर रहा है, कोई अफवाह सुना रहा है, तुमने कभी बीच में टोका कि इसकी मुझे कोई जरूरत नहीं? क्यों कचरा मेरी खोपड़ी में डाल रहे हो? डाल देना आसान है, निकालना मुश्किल है। ध्यान करने वालों से पूछो! जब वे निकालने बैठते हैं तब वह निकलता नहीं। वह जड़ें जमा ली हैं उसने। और इकट्ठा करते वक्त होश नहीं रखा।

कृत्य भी तुम गलत करते हो, व्यर्थ का सामान इकट्ठा करते हो, व्यर्थ के विचार इकट्ठे कर लेते हो। तुम धीरे-धीरे एक कबाड़खाना हो जाते हो। कबाड़ी की दुकान में और तुम्हारे जीवन में कोई अंतर नहीं है। थोड़ा सजग होओ।

नानक कहते हैं कि तुम्हारे एक-एक कृत्य से तुम्हारा जीवन निर्मित हो रहा है। तो एक-एक कृत्य को बहुत विचार कर करो।

– ***ओशो***

एक ओंकार सतनाम, सत्रहवां प्रवचन
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)

ओशोधाम नई दिल्ली में

24 से 26 दिसंबर

उद्घाटन : सायं, 23 दिसंबर

10–15 वर्ष के बच्चों के लिए ध्यान शिविर

संचालन : मा देव दक्षिणा एवं साथी

अभिभावकों के लिए ध्यान शिविर

संचालन : स्वामी वैराग्य अमृत

नोट : अभिभावकों के लिए मरून और सफेद रोब अनिवार्य है

ओशो नो-माइंड ग्रुप

12–18 नवंबर

(उद्घाटन : 11 नवंबर, शाम 6.30 बजे)

संचालन : मा धर्म ज्योति

ग्रुप-बुकिंग के लिए पूर्व-सूचित करना अनिवार्य है

अ-मन का अर्थ है—निर्विचार चैतन्य। और मन का अर्थ है—निर्विचार चैतन्य नहीं, वरन जिबरिश (अनर्गल प्रलाप)। और जब मैं तुमसे जिबरिश करने को कहता हूं, तो मैं इतना ही कह रहा हूं कि मन और उसके सब उपद्रवों को बाहर निकाल फेंको, ताकि पीछे तुम बच रहो—विशुद्ध, निर्मल, पारदर्शी, द्रष्टा।

– ओशो